Research Paper IMPACT FACTOR VALUE : 5.983 | E-ISSN NO : 2455-295X | VOLUME : 11 | ISSUE : 3 | MARCH 2025

MADHYA PASHAN KALIN STHAL BAGOR: EK ADHYAYAN

मध्य पाषाण कालीन स्थल बागोर:एक अध्ययन

भैरूं लाल कुम्हार [1]

[1] **सहायक प्रोफेसर (वीएसवाई) (इतिहास) सरकारी कॉलेज गुलाबपुरा (भीलवाड़ा) राजस्थान.**

ABSTRACT:

भारतीय पुरातत्व में प्राचीन काल की सभ्यता और संस्कृति में बौद्धों की दृष्टि से काफी समृद्धिशाली रही है, वही भारत की दृष्टि से मध्य पाषाण कालीन स्थल बागोर (राजस्थान) में एक बेहद ही महत्वपूर्ण स्थल है जाहा से प्राचीन काल की संस्कृति और संस्कृति में पौराणिक कथाओं के साथ-साथ लघु पाषाणोपकरण के दर्शन से काफी समृद्धशाली रही है, जिससे हमें यह अनुमान लगाया जा सकता है कि यह स्थल अन्य पुरातात्विक स्थलों में भी काफी समृद्ध है। प्रतीकों की नगण्यता ही थी या बहुत कम प्रतीकात्मकता पाई गई है। वहां की समुंद्र संस्कृति से हमें जानने और समझने में आसानी होती है कि वहां विभिन्न प्रकार की खोज की जाती है और वहां से विभिन्न प्रकार की खोज की जाती है। कियह सभ्यता अपने समय में कितने समुन्नत व विकसित हुई थी।

बागोर पुरास्थल एक नदी तट पर बसा प्रागैतिहासिक सभ्यता स्थल है जहाँ से यहाँ के जन जीवन की आर्थिक गतिविधियाँ, कृषि, जंगली जानवरों का शिकार, सूक्ष्म भोजन के उपकरण, लौह के उपकरण जैसे साक्ष्यों से ऐसा प्रतीत होता है कि यहाँ के लोग उस समय तकनिक और अन्य गतिविधियों से काफी अलग थे।

KEYWORDS:

पशुपालन, लघु पाषाणोपकरण, आखेट,लौह उपकरण, आदिम संस्कृति ।

PAPER ACCEPTED DATE:	PAPER PUBLISHED DATE:
19th March 2025	21st March 2025

विषय प्रवेश:

1. बागोर पुरातात्विक स्थल अवस्थिति:

प्रागैतिहासिक पुरास्थल बागोर देश के राजस्थान के भीलवाड़ा जिले के माण्डल तहसील मुख्यालय से 27 किलोमीटर व कोठारी नदी के तट पर बसा बागोर कस्बे में अवस्थित है, जो नदी के बायें किनारे पर स्थित है यह पुरास्थल देश का सबसे पडा़ मेसेालिथिक (प्रागैतिहासिक) स्थल माना जाता है कालान्तर में इस स्थल की क्षैतिज खुदाई में काफी पुरातात्विक सामग्रियो का साक्ष्य पाया गया है ।

बागोर पुरास्थल उस समय की सामाजिक व आर्थिक अवस्था कि बखुबी जानकारी के साक्ष्य पाये गये है।

बागोर सभ्यता के उत्खनन से यहां के लोगो द्वारा अपनी आजिविका चलाने हेतु पशुपालन तथा अपने भोजन की आवश्यकता हेतु की जाने वाली शिकार (आखेट क्रियाओ) के साक्ष्य पाये गये है।इस सभ्यता को विभिन्नपुराविदो ने विभिन्न ऐतिहासिक चरणों में बांटकर पर्याप्त अध्ययन किया है।

2. बागोर पुरास्थल का अध्ययन:

देश के इस प्रागैतिहासिक पुराण के कलाकारो में वीरेंद्र नाथ मिश्र एवं सहायक। एल. एस. लेशनी ने 1967.1969 में इसका पुनर्निर्माण किया और इसके स्थान पर डेक्कन कॉलेज पूना और राजस्थान पुरातत्व विभाग द्वारा वृहत् स्तरघाट पर बनाया गया और इस स्मारक का निर्माण राजस्थान में सबसे प्राचीन पशुपालन की अस्थियों की गहराई में किया गया। पुरातत्ववेत्ताओ ने इस पुरास्थल को तीन सांस्कृतिक मंचों में शामिल किया है, चित्र 14 या रेडियोकार्बन डेटिंग चरण -1 या इसे सांस्कृतिक मंच के आधार पर 5000 और 2500 बी.पी. (अंकेलिब्रिटेड रेडियोकार्बन डेटियो) के बीच रखा गया है।

इस पुरास्थल नदी तट पर अस्थित होने के कारण का अनुमान लगाया जा सकता है कि प्राकृतिक जन जीवन समानता में जल की उपलब्धता वाले क्षत्रों को ही अपना निवास स्थान बनाया गया है, जहां पर उनके और उनके पालतू जानवरों के लिए पानी की सुविधा उपलब्ध है, इसके अलावा इस पुरास्थल से पांच प्रागैतिहासिक मानव कंकाल पाए गए हैं, जहां उन्हें स्थापित किया गया था।

बागोर पुरास्थल से कथित तौर पर भारत में पेटी घोड़ा का सबसे प्राचीन प्रतीक (रिकार्ड) पाया गया था।

3. बागोर पुरास्थल का सामान्य जन जीवन:

इस प्रागैतिहासिक स्थल का सामान्य जन जीवन उस समय की प्राकृतिक दशाओं पर आधारित था जो मूल रूप से उस समय के बागोर सभ्यता के लोगों द्वारा अपनायी जाने वाली सामान्य दैनिक जीवन के उपयोगी वस्तुओं की मात्रा में निहित है, जिस प्रकार से उनके सामान्य दैनिक जीवन में उपयोग होने वाले लघु (सूक्ष्म)पाषाण उपकरणों को पर्याप्त मात्रा में शामिल किया गया है जिसमें स्क्रेपर, ब्लीड, छिद्रक और चंद्रिका नामक पाषाण उपकरण प्रमुखता से मिले हैं।

बागोर से प्राचीन कृषि बांस के साथ आखेट और यहां तक कि 14 प्रकार की कृषि के अवशेष पाए गए हैं, यह अनुमान लगाया जा सकता है कि बागोर सभ्यता के प्रमुख लोग रूप से कृषि क्रियाएं करते थे और प्राचीन धातु के टुकड़े भी उनके जीवन का अंग बने हुए थे, जिनमें पुराविदो को पांच ताम्र यंत्र भी मिले थे, जिनमें से एक यंत्र 10.5 से 10.5 मील की दूरी पर है। का छोटा सा छेद बनाया गया था जो इससे संबंधित था कि इस (तनाबा) धातु से भी परिचित थे और इसके उपकरणों के माध्यम से अपने दैनिक जीवन में काम लेते थे।

4. बागोर सभ्यता का भारतीय इतिहास में स्थान:

बागोर भारत के उतर पश्चिम दिशा में अवस्थित समुद्र तट मध्य पाषाण काली सभ्यता की महत्वपूर्ण जानकारी एक प्रसिद्ध पुरास्थल मानी जाती है, यहां पर एक टीला पाया जाता है जिसे महासतियो का टीला भी कहा जाता है जो कि बागोर से मिली साम्य दृष्टि से बहुत महत्वपूर्ण माना जाता है, क्योंकि बागोर से मिली सामुद्रिक पुरास्थल आदिम संस्कृति का संग्रहालय भी कहा जाता है। प्रागैतिहासिक पुराण बागोर में आम लोगों का दैनिक जीवन काफी सरल और सुस्पष्ट दिखाई देता है जिसमें पुष्पन के प्रतीक, लघुपाषाणों के प्रतीक, ताम्र उपकरण और अन्य प्रकार के दैनिक उपयोगी वस्तुओं की संख्या से यह स्पष्ट होता है कि वे

लोग अपने दैनिक जीवन को काफी सुस्पष्ट तरीके से जीते हैं थे। थे।

मध्यपाषाणिक स्थल बागोर में उस समय की समसामयिक वास्तुकला में काफी सु वैज्ञानिक तरीके से बसा हुआ था प्रागैतिहासिक स्थल बागोर से मिले सात अलग-अलग टाइलों की विशेषता दिखाई देती है जिन्हे पुराविदो ने हरि सात महासतियो के तिलो के नाम से अलंकृत किया।

इस प्रकार बागोर सभ्यता अपने समय की एक संस्था और उत्कृष्ट संस्कृति की विशेषता है।

5. बागोर संस्कृति (सभ्यता)की विशेषताएं:

(ए) पाषाण उपकरण:- इस स्थल से मिले विभिन्न प्रकार के पाषाणोपकरण (ब्लेड छिद्रक आदि) के कारण यह स्पश्ट हो जाता है कि यहां के निवासी विभिन्न प्रकार के पाषाणोपकरण (ब्लेड छिद्रक आदि) का उपयोग करते हैं।

बागोर सभ्यता के लोग इस प्रकार के उपकरणों का अपने दैनिक जीवन में काफी सुस्पष्ट तरीकों से उपयोग करते थे।

(बी) कृषि ओर भाई:-

1. बागोर पुरास्थल से प्राप्त कृषि के विभिन्न प्रकार के बीजा के ओबाये के प्रमाण प्रस्तुत करते हैं।

2. प्राचीन पशुपालन का प्रतीक उस समय के आर्थिक एवं सामाजिक जीवन को दर्शाता है।

3. विभिन्न प्रकार के उपकरणों के लिए यह निर्देश दिया जाता है कि वे लोग अपनी आर्थिक क्रियाऐं इन्ही उपकरणों के माध्यम से संपन्न करें।

(स). धातु उपकरण:-

1. यहा से मिली बायां की 10.5 सेमी की सुई का प्रतीक इस सभ्यता की तकनीक के बारे में जानकारी में कहा गया है कि वे लोग अपने जीवन का अंग बनाते हैं।

2. सात्विक मात्रा में ताम्र यंत्र की प्राप्ति इस बात का प्रमाण है कि उस समय इस धातु (ताम्र) विज्ञान के लोगो को अच्छा ज्ञान था।

(द). आखेट के प्रतीक:-

प्रागैतिहासिक स्थल बागोर के लोग वहां से मिले आखेट के निशानों के आधार पर अनुमान लगाते हैं कि वो लोग जानवरों का शिकार करके अपने मां को अपने आहार के रूप में उपयोग में लेते थे। यहां से आखेट के प्रतीकों की प्राप्ति कही न कही इस संस्कृति के लोगों में एक तरह की आखेट की प्रति जागृति को दृष्टि है।

(य) लोह उपकनो के प्रतीक:-

मध्यपाषाणकालीन पुरास्थल बागोर से केवल पाषाण उपकरण ही नहीं मिले बल्कि यह प्याज से पाषाणोपकरण के साथ साथ लोम मेटल के बने उपकरण भी पसंद करते हैं, जो कि इगिन्ट करते हैं कि यह पोषाहार के लोग पत्थर के साथ लोम मेटल का भी अच्छा प्रकार से ज्ञान था, जो वे लोग इन उपकरणों के माध्यम से कृषि क्रिया, जंगली पाषाण काशीकार करने के लिए, लोम मेटल के बने उपकरण, जंगली पाषाणोपकरण के साथ, लोम मेटल के बने उपकरण, जंगली पाषाणोपकरण के साथ, लोम मेटल के बने उपकरण, जंगली पाषाणोपकरण के साथ, लोम मेटल के बने उपकरण, जंगली पाषाणोपकरण के साथ, लोम मेटल के बने उपकरण भी मिले। अपने जीवन का एक वैज्ञानिक अंग समझकर इन उपकरणों को सुरुचिपूर्ण तरीके से उपयोग में लाएं थे।

6. बागोर सभ्यता का महत्व:-

एक मध्यपाषाणकालीन पुरातत्व स्थल के रूप में बागोर एक महत्वपूर्ण पूर्ण स्थल है जहां से कृषि एवं पशुपालन की तकनीक के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी मिलती है और यहां से प्राप्त लघुपाषाण उपकरण और धातु के उपकरण हमें यह कहते हैं कि बागोर पुरास्थल देश के प्रगतिशील पुरास्थल में अपना एक महत्वपूर्ण पूर्ण स्थान है। इतना ही नहीं बागोर सभ्यता स्थल अपने समसामयिक सभ्यता स्थल में काफी विकसित स्थल माना जाता है जो इसमें विभिन्न प्रकार के मिले-जुले स्मारक साम्रगी का एक उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत करता है। बागोर पुरास्थल से पशुओ के अस्थियों का महत्व यह निर्देश देते हैं कि यहा पर लोग पलटू पशुओ को अपने जीवन में काफी महत्वपूर्ण देते थे। यह सभ्यता कोठारी नदी के तट पर उस समय समुद्र तट पर थी, जब समुद्र तट पर वे लोग थे, जो अपने जीवन में नदियाँ बनाते थे, इसके महत्व को जानते थे और जल की उपलब्धता यात्रा आपके दैनिक समुद्र में काफी आकर्षण पैदा करती थी।

बगोर रेस्तराँ स्थल से मिली सीमांत सामग्री से यह अनुमान लगाया जा सकता है कि यह उस समय का सम्प्रदाय सुव्यवस्थित रही होगी।

निष्कर्ष:- बागोर पुरास्थलों से मिले धातु के उपकरणों से मिले प्राचीन मूर्तिकला उपकरण और आदिम संस्कृति से जुड़े अवशेष इन सभी से यह निष्कृष जनजाति है कि इस बागोर पुरास्थल का महत्व काफी मात्रा में दिखाई देता है और यहां का जीवन कृषि वशुपालन और आखेट की गतिविधियो से काफी जुड़ा हुआ है। अगर हम बागोर प्रागैतिहासिक पुरास्थल का वर्तमान दृष्टिकोन से अध्ययन करें तो हमें इस पुरास्थल की नदी की विशालता और इसके चारो ओर फेले उपमाओं के मैदान से ये लोग अपने आजिविका पुरास्थल पशुपालन, कृषि व्यवसाय और अन्य जीवनोपयोगी क्रिया क्षेत्र एक सम्पन करते थे इस नदी का वर्त्तमान बहाव राजस्थान के राजसमंद जिले में देवगढ़ के पास अरावली की पहाड़ियों से निकलता है जो स्थानीय भाषा में विजरल या बड़जाल ग्राम से संबंधित है। इसके पश्चिम में भीलवाड़ा जिले में प्रवेश करके रायपुर माधडल, भीलवाड़ा जिला मुख्यालय के निकट बना मेजा ग्राम के पास बना विशाल बांध है, जिसका नाम मेजा बांध के नाम पर रखा गया है। जिसे बनास सभ्यता या संस्कृति भी कहा जाता है।

इस प्रकार हम यह अनुमान लगा सकते हैं कि इस नदी के किनारे के विशाल तट पर उस समय अन्य संस्कृतियों का अस्तित्व रहेगा। वेसे देखा जाए तो बागोर मध्यपाषाणकालीन पुरास्थल आपके पास उस समय सुव्यस्थित स्थल होगा, हमें इस स्थल के आस-पास की ओर किसी भी समकालीन संस्कृति या संस्कृति स्थल के बारे में जानकारी नहीं मिलेगी। इस प्रकार मध्यपाषाणकालीन स्थल बागोर की कृषि क्रियाओ की अग्रगामी तकनीक सिद्ध होती है जो इतनी ही नहीं यह संस्कृति वर्तमान धातु कौशल, उपकरण तकनीक और कृषि क्रियाओं में जानवरों को उपयोग में लेती है जैसे बेंलो के द्वारा हल जोतना, फ़सलो की निराई खोदाई करना व फ़ार्मा खेतलियानो में लेले अन्न को भूसे से अलग करना आदि क्रिया वो लोग इन पशुओ के माध्यम से ही करते थे। इस प्रकार यह सभ्यता अपने समय में काफी समृद्ध रही है।

REFERENCES

1. ए. घोष एवं भारतीय ऐतिहासिक अनुसंधान परिषद नई दिल्ली।

2. वी.एन. मिश्र बगोर उ.प्र. भारत में एक देर से मध्य पाषाण बस्ती।